वामदेवो गौतमः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्

यन्न इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान्करति शुष्म्या चित्।
ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति॥ ४.०२२.०१

नः- अस्माकम्। यत्- यद्धव्यम्। महान्- महात्मा। शुष्मी- बली। इन्द्रः। जुजुषे- सेवते। वष्टि- कामयते। च। तत्। आ करत्- स्वीकरोतु। ब्रह्म- उपासनं हव्यं वा। स्तोमम्- स्तोत्रम्। सोमम्- रसम्। उक्था- शस्त्राणि। मघवा- इन्द्रः स्वीकरोतु। शवसा- स्वबलेन। अश्मानम्- वज्रम्। बिभ्रत् धारयन्। एति- आगच्छति ॥१॥

वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान्।
श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये॥ ४.०२२.०२

वृषा- वर्षक इन्द्रः। वृषन्धिम्- वर्षकम्। चतुरश्रिम्- धाराचतुष्टयसहितं वज्रम्। उग्रः- उद्गूर्णः। नृतमः- अतिशयेन नेता। शचीवान्- प्रज्ञावान्। बाहुभ्याम्- भुजाभ्याम्। अस्यन्- क्षिपन्। यस्याः। पर्वाणि- देशान्। सख्याय- मैत्र्यै। विव्ये- संवृतवान्। ऊर्णां- तामाच्छादिकाम्। परुष्णीम्- पर्ववतीं नदीं मूलशक्तिधाराम्। श्रिये- भद्राय। उषमाणः- सेवते ॥२॥

यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।
दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत्प्र भूम॥ ४.०२२.०३

यः। देवः- लीलापुरुषः। देवतमः- अतिशयेन द्योतनशीलः। जायमानः- उद्भूतः। महः- महतीभिः। वाजेभिः- गतिभिः। महद्भिश्च। शुष्मैः- बलैः। बाह्वोः- भुजयोः। उशन्तम्- कामयमानम्। वज्रम्। दधानः- धारयन्। अमेन- स्वबलेन। द्याम्- नभः। भूम- भूमिम्। प्र- प्रकर्षेण। रेजयत्- अकम्पयत् ॥३॥

Dr. Rangani

WEBOLIM

विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्ऋष्वाजनिमन्रेजत क्षाः।

आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत्परिज्मन्नोनुवन्त वाताः॥ ४.०२२.०४

विश्वा- सर्वे। रोधांसि- उन्नतप्रदेशा गिरयः। पूर्वीः- प्राचीनाः। प्रवतः- प्रवणाः समुद्राः। च। द्यौः- नभः। क्षाः- भूमिः। जनिमन्- जन्मनि। ऋष्वात्- महत इन्द्रात्। रेजत- अकम्पन्त। शुष्मी- बली। गोः- सूर्यस्य। मातरा- मातापितरौ द्यावापृथिव्यौ। आ भरति- धरति। नृवत्- वीरवत्। परिज्मन्- अन्तरिक्षे। वाताः- वायवः। नोनुवन्त- शब्दं कुर्वन्ति ॥४॥

ता तू त इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित्सवनेषु प्रवाच्या।

यच्छूर धृष्णो धृषता दधृष्वानहिं वज्रेण शवसाविवेषीः॥ ४.०२२.०५

इन्द्र- परमेश्वर। महतः- महात्मनः। ते- तव। महानि- महान्ति। ता- तानि कर्माणि। विश्वेषु- सर्वेषु। सवनेषु- सम्भजनेषु। प्रवाच्या- प्रकर्षेण वक्तव्यानि। शूर- समर्थ। धृष्णो- शत्रुधर्षक। धृषता- शत्रुधर्षणबलेन। दधृष्वान्- लोकं धारयन्। अहिम्- वृत्रम्। शवसा- स्वबलभूतेन। वज्रेण। अविवेषीः- अवधीः ॥५॥

ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊध्नः।

अधा ह त्वद्वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त॥ ४.०२२.०६

तुविनृम्ण- बहुवीर्ययुक्त। वृष्णः- वर्षकाद्भवतोऽनुग्रहेण। विश्वा- सर्वाः। धेनवः- गावः। ऊध्नः। सिस्रते- क्षीरं क्षरन्ति। ईशनशक्त्या चिद्रश्मयो ज्ञानमध्यात्मसाधकाय क्षरन्तीत्याध्यात्मिके। ते- तव। ता- तानि कर्माणि। सत्या- सत्यान्येव। अध- अपि च। वृषमनः- हे वर्षयितुं प्रवृत्त। त्वत्- त्वत्तः। भियानाः- भीताः। त्वदाज्ञापरिपालिन्य इति भावः। सिन्धवः- आपः। जवसा- वेगेन। प्र- प्रकर्षेण। चक्रमन्त- सरन्ति ॥६॥

अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः।

यत्सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै॥ ४.०२२.०७

Dr. Ranganji

WEBOLIM

हरिवः- प्राणाश्वयुक्त। इन्द्र- परमेश्वर। अत्र। ते- तव। ताः। बद्धधानाः- वृत्रेणावरणेन बद्धाः। स्वसारः- स्वतःसरणशीलाः। देवीः- द्योतनशीला आपो मूलशक्तिधाराः। अवोभिः- रक्षाशक्तिभिः स्थितं त्वाम्। स्तवन्त- स्तोत्रं कुर्वन्ति। स्यनयध्यै- तासां प्रवाहाय। दीर्घाम्। प्रसितिम्- नियतिम्। प्र- प्रकर्षेण। सीम्- सर्वतः। मुचः- अमोचयः ॥७॥

पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः।
अस्मद्र्यक्छुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः॥ ४.०२२.०८

मद्यः- तृप्तिकरः। अंशुः- सोमो रसः। सिन्धुर्न- अपां धारा इव। पिपीळे- भवदर्थं निष्पन्नः। आशुः- प्राणाश्वः। तुव्योजसम्- प्रभूतबलम्। गोः रश्मिम्- चिद्रश्मिम्। न- इव। शुशुचानस्य- दीप्यमानस्य। शसमानस्य- प्रशंसां कुर्वतः सम्बन्धी। अस्मद्र्यक्- अस्मदभिमुखम्। शमी- चित्तप्रशमनम्। आ यम्याः- आयच्छतु। त्वा- भवन्तम्। शक्तिरायच्छतु ॥८॥

अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि।
अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य॥ ४.०२२.०९

सहुरे- सहनशील। अस्मे- अस्मभ्यम्। वर्षिष्ठा- वर्षकाणि। ज्येष्ठा- प्रथमानि। सहांसि- सहनशीलानि। नृम्णानि- वीर्याणि। सत्रा- सर्वदा। कृणुहि- कुरु। अस्मभ्यम्- नः। सुहनानि- नाशकराणि। वृत्रा- आवरणानि। रन्धि- वशं नय। वनुषः- हिंसकस्य। मर्त्यस्य- मनुष्यस्य। वधः- हिंसाम्। जहि- नाशय ॥९॥

अस्माकमित्सु शृणुहि त्वमिन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान्।
अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधीरस्माकं सु मघवन्बोधि गोदाः॥ ४.०२२.१०

इन्द्र- परमेश्वर। अस्माकम्- नः स्तोत्रम्। सु- सुष्ठु। शृणुहि- शृणु। अस्मभ्यम्- नः। चित्रान्- नानाविधानि। वाजान्- अन्नानि। उप माहि- प्रयच्छ। अस्मभ्यम्- नः। विश्वाः- सर्वाः। पुरन्धीः-

Dr. Rangaji

WEBOLIM

बहुधारणाशक्तीः। इषणः- प्रेरय। मघवन्- सम्पद्वन्। अस्माकम्- नः। गोदाः- चिद्रश्मिदायकः सन्। सु- सुष्ठु। बोधि ॥१० ॥

नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ४.०२२.११
पूर्वं व्याख्यातम् ॥११ ॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM